ख
१८

ख
१८

२
२८

~~१५१~~ खंडित

१३६

~~१८५~~



सुल्तानको हराकर नागौर नामक नगरको लिया, फीरोज-की बनाई हुई ऊँची मस्जिदको जलाया, किलेको तोड़ा, हाथी छीन लिये, मुसलमानोंको कैद किया तथा असंख्य गौवोंकी रक्षा यवनोंसे की। महाराणा कुम्भाके बाद उदयसिंह, रायमल तथा संग्रामसिंह हुए। जिस समय महाराणा संग्रामसिंह या सांगा मेवाड़के सिंहासनपर बैठे उस समय दिल्लीमें लोदी वंशका सुल्तान सिकन्दर लोदी, गुजरातमें महमूद शाह और मालवेमें नासिर शाह राज्य करते थे। राणाने इनके नाकों दम कर रखा था। सिकन्दरके आधीन देशोंको राणाने अपने कब्जेमें किया। सिकन्दर लोदीके मरनेके बाद इब्राहीम लोदीने मेवाड़पर चढ़ाई की। लड़ाईमें सुल्तान भाग निकला। राणा सांगा की जीत हुई, परन्तु राणाका बायां हाथ तलवारसे कट गया।

राणा सांगा और बाबरकी लड़ाई बड़ी मशहूर है। सन १५२७ में बाबरने राणा सांगापर चढ़ाई की थी। ...ने पदिम नामक स्थानमें बाबरके सेनापतिको करारी ... बाबरने पुनः साहस करके तथा अपने

सिपाहियोंको कुरानकी शपथ खिलाकर उन्हें जोश दिलाया। राणा भी युद्धके लिये तैयार हो गये। परन्तु युद्धमें राणाके सिरमें एक तीर लग गया, जिससे वह बेहोश हो गये। बेहोश हो जानेके बाद लोग राणाको लड़ाईके मैदानसे ले गये। बाकी राजपूतोंने बड़ी वीरता दिखलाई। पर राणाके नहीं रहनेसे मुगलोंकी जीत हुई।

सांगाके बाद रत्नसिंह राजा हुए जो कि बूंदीके राजकुमार सूरजमलके हाथों मारे गये। इसके बाद सांगाका दूसरा पुत्र विक्रमाजीत राजा बना। वह बड़ा कमजोर राजा था। ऐसी दशामें बनबीर नामके एक व्यक्तिने उन्नीस वर्षके महाराणाको मार डाला। उदय सिंहको भी वह मारना चाहता था। परन्तु जब स्वामि-भक्त पन्ना धायको पता लगा तो उसने बालक उदयसिंह को बाहर निकाल कर उसकी जगहपर अपने बालक को सुला दिया। उसके पुत्रको मारकर बनबीरने समझा कि उदयसिंह मर गया। परन्तु उदयसिंह साफ साफ बच गया। पन्ना उसे लेकर कुम्भलमेर पहुँची। वहीं उसका लालन पालन हुआ। बड़ा होकर

मेवाड़से निकालकर आप मेवाड़का राणा बन गया। राणा उदयसिंहने उदयपुर नामका एक अलग शहर बसाया। अकबरने चित्तौड़पर चढ़ाई की। उदयसिंह पहाड़ोंपर चले गये। उदयसिंहके दो सरदार जयमल और फत्ताने इस युद्धमें कमाल किया। चित्तौड़की रक्षा इन लोगोंने बड़ी मुस्तैदीसे की। दोनों ओरसे खूब घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें अकबरने किलेपर अधिकार कर लिया।

महाराणा उदयसिंहका देहान्त सन् १५७२ ईस्वीमें हुआ।

राणाप्रतापकी गद्दी

महाराणा उदयसिंहको बीस रानियां थीं। उन बीस रानियोंसे पच्चीस राजकुमारोंका जन्म हुआ। राणाप्रताप सबसे बड़े और योग्य थे। सारी प्रजा उनके गुणोंपर मुग्ध थी। राज्यके सरदार और सामन्त भी बालक प्रतापको होनहार और प्रतापी देखकर फूले नहीं समाते थे। परन्तु राणा उदयसिंह अपनी सबसे प्यारी छोटी रानी भटियाणीको अधिक मानते थे। पाठकों [illegible] है [illegible] थकी कथा याद होगी। दशरथ भी

अपनी छोटी रानी कैकेयीको प्यार करते थे। कैकेयीने भरतके लिये राज्य माँगा। दशरथ अवाक् रह गये। भगवान रामचन्द्र स्वयं ही राज्यको लात मारकर बनको चले गये। इसी प्रकार उदयसिंहने प्रतापको गद्दी न दी। भटियाणीके पुत्र जगमलको राज्यका उत्तराधिकारी बनाया।

जगमल बड़ाही अयोग्य तथा उद्धत स्वभावका आदमी था। प्रजा और सरदार दोनों ही इससे नाखुश थे। दशरथके पुत्र भरत और जगमलमें बड़ाही अन्तर था। भरत बड़े साधु प्रकृतिके पुरुष थे। वे अपने बड़े भाई रामचन्द्रके प्रति अगाध भक्ति रखते थे।

राजाके राजवंशकी यह प्रथा थी कि युवराज राजाकी दाह-क्रियामें सम्मिलित नहीं होते थे। जब सभी लोग गोगुन्दा नामक स्थानमें राणा उदयसिंहकी दाह-क्रिया करने गये तो जगमलको वहाँ न पाया। प्रताप जैसे शक्तिशाली और गुणवान राजकुमारकी जगह जगमलका सुशोभित होना किसीको अच्छा न लगा। सभी लोग प्रतापको ही मेवाड़की

चाहते थे। राणा उदय सिंहकी इच्छा होते हुए भी राज्य के सामन्त-सरदारोंने प्रतापको राज्य-तिलक देनेका संकल्प किया।

प्रतापसिंहको जगमलके गद्दी पानेसे तनिक भी क्लेश नहीं हुआ। वे बड़े प्रसन्न थे। परन्तु जगमल स्वभावका उद्दण्ड था। उसके वर्तावसे प्रजा नाराज हो गई। सरदार चिढ़ से गये। चारों तरफ गड़बड़ी होने लगी। एक दिन प्रतापसिंहने जगमलसे कहा—'जगमल, तुम आज मेवाड़के राणा हो। तुम्हारे चारो तरफ शत्रु मंडरा रहे हैं। ऐसी अवस्थामें प्रजा और सरदारों-को खुश रखना तुम्हारा धर्म है।' इस पर जगमलको बड़ा रोष हो आया और उसने कहा—'तुम्हें उपदेश देनेका कोई अधिकार नहीं है। मैं राणा हूं। तुम मेरी प्रजा हो। तुमने राणाके साथ अनुचित व्यवहार किया है। इसलिये तुम्हें मेवाड़ छोड़कर कहीं दूसरी जगह जाना होगा।

प्रतापसिंहने देखा कि उनकी सुनवाई नहीं हो रही है और प्रजाका कष्ट भी उनसे सहन नहीं हो

सकता। इसलिये चुपचाप मेवाड़से निकल जाना ही अच्छा समझा। प्रताप जानेकी तैयारीमें लग गये। जब सामन्त सरदारोंको इसकी खबर लगी तब वे प्रतापसिंहको रोकनेके लिये गये।

सरदारोंके बहुत समझानेपर प्रताप मान गये और मेवाड़के हितके लिये गद्दी लेना स्वीकार किया। उन दिनों मेवाड़का ताज काटोंका ताज था। गद्दीपर बैठना मुश्किल नहीं था परन्तु उसकी शान और पूर्व गौरवको बनाये रखना हिम्मतका काम था। जो हो, जगमलसे मेवाड़की कीर्तिरक्षा नहीं हो सकती थी।

सामन्त सरदारोंके साथ प्रताप राजमहलमें आये। सालुम्बराके सरदारने जगमलसे कहा—'राजकुमार! यह गद्दी तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता प्रताप की है। तुमसे गलती हुई है।'

जगमल सभी सामन्त-सरदारोंको प्रतापके पक्षमें देखकर हक्का-बक्का हो गया। वह गद्दीसे उतर गया। सरदारोंने प्रतापको राज्य तिलक लगाया। प्रतापने सभी को प्रणाम किया। 'महाराणाप्रतापकी जय' से [illegible]

गूंज उठीं। बिना लड़ाईके ही प्रतापने जगमलको गद्दीसे उतार कर अपना अधिकार जमा लिया। जगमलने अकबरके अजमेरी सूबेदारके यहाँ जाकर शरण ली। अकबरने उसे जागीर देकर अपने पक्षमें कर लिया।

प्रतापका अभिषेक गोगुंदामें हुआ। इसके बाद कुम्भलगढ़में शास्त्रोंके अनुसार अभिषेकका कार्य पूरा किया गया। कुम्भलगढ़में चन्द्रसेन राठौर जो अकबरका घोर शत्रु था, मिला। चन्द्रसेन और प्रताप दोनों ही अकबरके नाश करनेके लिये कटिबद्ध हो गये।

शक्तिसिंहसे अनबन

राणाप्रतापके एक छोटे भाई शक्तिसिंह थे। शक्तिसिंह बड़ेही उद्दण्ड, हठी और क्रूर स्वभावके व्यक्ति थे। एक रामके भाई लक्ष्मण थे जिन्होंने अपने बड़े भाईकी सेवामें अपना जीवन लगा दिया। एक प्रतापके भाई शक्तिसिंह थे जिन्होंने प्रताप जैसे भाईको पाकर उनके साथ शत्रुता करके भारतका सत्यानाश किया।

शक्तिसिंह वीर और साहसी थे। अपने बचपनसे

ही अस्त्र-शस्त्रकी शिक्षामें दत्तचित्त रहते थे। जब शक्तिसिंहकी उम्र पांच सालकी थी तभी एक ऐसी घटना हुई जिसे देखकर उदयसिंह और सभी सरदार थर्रा गये। एक समय एक नई तलवार बनवाई गई थी। उसकी धार कैसी है इत्यादि बातें राज सभामें हो रही थीं। उसकी परीक्षाके लिये विविध उपाय सोचे जा रहे थे। बालक शक्तिसिंह भी वहीं बैठा था। उसने उस तलवारको उठाकर अपनी एक अंगुली पर चलाया। अंगुली कट गई और खूनकी धारा बह चली। परन्तु शक्तिसिंहके चेहरेपर किसी तरहके कष्टके चिह्न नहीं दिखलाई दिये। वह चुपचाप उसी तरह बैठा रहा मानों कुछ हुआ ही नहीं।

महाराणा उदयसिंह अवाक् हो गये। शक्तिसिंहकी जन्मकुण्डलीमें लिखा था कि वह स्वजनका घात करेगा। इस बातकी चिन्ता राणाको सताने लगी।

राणाने शक्तिसिंहके इस कार्यको मेवाड़के हितके लिये बाधक समझकर मृत्युदण्डकी आज्ञा दे दी। सालुम्बराके सरदारको शक्तिसिंह जैसे लो...

फाँसीपर जाते हुए देखकर दया आ गई। उन्होंने राणासे शक्तिसिंहको छोड़ देने तथा अपने घर ले जाकर पुत्रवत् रखनेकी प्रार्थना की। राणाने सालुम्बराके सरदारकी बातको अस्वीकार करना अनुचित समझा शक्तिसिंह सालुम्बरा-सरदारके हवाले किये गये।

राणाप्रतापने गद्दी धारण करते ही अपने छोटे भाई शक्तिसिंहको बुला लिया। दोनों भाई सानन्द रहने लगे। दिन बीतने लगे। विजयादशमी आई। प्रथाके अनुसार प्रताप और शक्तिसिंह शिकार खेलनेके लिये जंगलमें गये। एक जङ्गली सुअर दिखलाई पड़ा। दोनों भाइयोंने एक साथ ही बाण चलाया। इनमेंसे एक तीर सुअरके लग गया। परन्तु इस बातपर विवाद खड़ा हो गया कि किसका निशाना लगा। राणाने कहा कि निशाना मेरा था। शक्तिसिंहने कहा कि नहीं, वह तीर मेरा था। इसी बातपर दोनों भाइयोंमें झगड़ा होने लगा। यहाँ तक नौबत आ गई कि दोनों आदमी एक दूसरेके प्रति तलवार निकाल कर लड़नेके लिये तैयार

यह भयानक दृश्य राजवंशके पुरोहितसे देखा न गया। वह सोचने लगा कि जिस राजवंशकी कृपासे आज कितनी सदियोंसे हमारा भरण-पोषण हो रहा है तथा नाना प्रकारके सुख प्राप्य हैं। उस राजवंशके दो लालों-को अपनी आँखोंके सामने मरते हुए कैसे देखूँगा। पुरोहितने राणा प्रतापसे कहा 'महाराणा अपने हाथसे अपने ही पैरमें कुल्हाड़ी न लगाइये। घरकी फूटसे मेवाड़का नाश हो जायगा। शत्रु पक्ष सबल होगा।'

राणाजीने कहा—कुल देव, राणाकी ऐसी अवज्ञा ? मैं इसका यथोचित दण्ड दूँगा

पुरोहितने देखा कि ये किसी तरह शान्त नहीं होते। अन्तमें उन्होंने अपने ही खूनसे उनकी क्रोधाग्नि को शान्त करनेका संकल्प कर लिया। इतना सोचकर पुरोहितने अपनी छातीमें कटार भोंक ली। खूनकी नदी बह चली। पुरोहितने अपनी जान देकर उन दोनों भाइयोंके द्वन्द्वयुद्धको रोका। राणाप्रताप शोकसे भर गये। शक्तिसिंह भी अपनी करनी पर पश्चात्ताप करने लगा। परन्तु अब क्या था। राणा

मृत-प्राय शरीरको अपनी गोदमें लेकर बैठ गये। शक्ति-सिंहके कारण ही यह घटना हुई। राणाने उन्हें मेवाड़से निकाल दिया। शक्तिसिंह भी धीरेसे मेवाड़ छोड़कर अकबरको शरणमें चला गया। इस तरह भाई-भाईके वैरने भारतका सत्यानाश किया। शक्तिसिंहके उकसानेसे अकबरने मेवाड़पर चढ़ाई की।

राणाकी वीर प्रतिज्ञा

प्यारे पाठको! जब राणा प्रताप मेवाड़की गद्दीपर बैठे उस समय मुगल सम्राट् अकबर दिल्लीकी गद्दीपर था। वह बहुत चतुर बादशाह था। जिस समय वह गद्दीपर बैठा चारों तरफ विद्रोहकी अग्नि फैली हुई थी। दूर-दूरके राजे स्वतन्त्र हो गये। परन्तु अकबरने बारी-बारीसे सभीको परास्त किया। राजस्थान अपनी वीरताके लिये सदासे प्रसिद्ध था। फिर भी राजपूत राजाओंने अकबरसे लड़ना पसन्द नहीं किया। बहुतसे राजपूत राजाओंने अकबरकी अधीनता स्वीकार कर ली। …स्ता हद दर्जेतक बढ़ गई थी। इन लोगोंने

अकबरको खुश करनेके लिये अपनी बहिन-बेटियों तकको अकबरके हवाले कर दिया। जब अकबरने वीर राज-पूतोंको अपने कब्जेमें कर लिया, तब इन्हीं राजपूत राजाओंकी सहायतासे अन्य दूसरे हिन्दू राजाओंको जीतना शुरू किया। अकबरके साम्राज्यको बहुत दूरतक बढ़ानेवाले सेनापतियोंमें राजा मानसिंह प्रधान थे। राजा मानसिंह बड़े लड़ाकू और वीर सरदार थे। इनके रण-कौशलके आगे किसीकी चलती न थी। परन्तु यह सब व्यर्थ था। इन्होंने अपनी शक्ति एक विदेशी यवन राज्य की मजबूतीमें लगायी। अकबरकी शक्ति इन्हीं हिंदू राजाओंपर निर्भर करती थी।

इस अंधकार युगमें एक राणा प्रताप ही भारतकी स्वतंत्रताके एकमात्र दीपक थे। इन्होंने अकबरकी गुलामी स्वीकार नहीं की। मेवाड़ उजाड़ हो गया। राणाको जङ्गलों और पहाड़ोंमें भी ठौर न रह गयी। परन्तु अपनी राजपूती टेक और हिंदुस्तानी शानको कभी नीचा नहीं होने दिया। वह मेवाड़की गद्दीपर आसीन हो गये। फिर भी उनके भाग्यमें चैन कहां था। चित्तौ—

मुगलोंके हाथमें था। चितौड़का स्थान मेवाड़ियोंके लिये ही नहीं वरन सारे भारतके लिये एक शान और गौरवकी वस्तु है। चितौड़का नाम लेते ही उन वीर राजपूतों और क्षत्राणियोंका ध्यान आ जाता है, जिन लोगोंने अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये जहां अपने प्राणोंकी बलि प्रसन्नतासे की थी। राणा प्रतापने चित्तौड़का दुर्ग फिरसे जीतनेकी ठानी। अपने सामंत सरदारोंको बुलाकर भीष्म प्रतिज्ञा की और करवाई। कुम्भलमेरके दुर्गमें महाकालीका मंदिर था। सभी सरदारोंके साथ राणा-जी गये और जमीनपर तलवार रखकर घुटना टेक सभी लोग बैठ गये।

प्रतापने कहा—आप लोग प्रतिज्ञा करें कि यदि आवश्यकता होगी तो हमलोग चित्तौड़के लिये प्राणोंकी भेंट कर देंगे। जबतक चित्तौड़का उद्धार न होगा तबतक भोजपत्रपर भोजन करेंगे, घास पातपर सोएंगे, वेष-भूषा ग्रहण न करेंगे और मुगलोंके साथ अपने वंशका संबंध न करेंगे। प्राण रहते कभी दासत्व स्वीकार न करेंगे। [illegible] राणाजीके साथ सभी सरदारोंने प्रतिज्ञा की। यह

प्रतिज्ञा बड़ी भीषण प्रतिज्ञा थी। यह एक साधना है। देशहित केवल कहने और सुननेसे नहीं होता। उसके लिये सब कुछ त्यागना पड़ता है। ऐसी कठिन प्रतिज्ञा प्रतापने की।

एक नई उमंग मेवाड़के एक सिरेसे दूसरे सिरेतक लहराने लगी। प्रतापके जय निनादसे आकाश गूंज उठा। मेवाड़के बच्चे-बच्चे अपनी मातृभूमिकी मान-रक्षाके लिये मर मिटनेको उतावले होने लगे।

जब अकबरने राणाकी भीषण प्रतिज्ञाको सुना तो वह थर्रा उठा। अकबर राणाप्रतापको भी मुगल राज्यके एक राजभक्त जागीरदारके रूपमें रखना चाहता था। यदि राणा भी और राजपूत राजाओंकी तरह अधीनता स्वीकार करके अपनी बहिन बेटियोंको अकबरके हवाले कर देते तो राणाका मेवाड़का राज्य सुरक्षित हो जाता। कदाचित् और अधिक भी जगह मिल जाती। परन्तु राणा अपनी स्वतंत्रता, अपना धर्म और पूर्व कीर्तिको किसी भी मूल्यपर बेचनेके लिये तैयार न हुए। कहां प्रतापी अकबर जिसके पास असंख्य बल और

तरफ राणा जो कुछ सच्चे वीरोंके साथ अपनी शानकी रक्षाके लिये उद्यत थे ?

राजा मान सिंहसे मिलन

राणा प्रताप अपनी तैयारीमें लगे थे। उदयपुरको छोड़ जङ्गल और पहाड़ोंमें जाकर बस गये। उनके साथ-साथ प्रजा भी मेवाड़को उजाड़ और वीरान बनाकर जङ्गलोंमें जा बसी। लोगोंको लड़नेकी शिक्षा दी जाने लगी। राणा सादे और तपस्वीके वेषमें रहते थे। उनके सरदार भी अपने प्रिय राणाका अनुकरण करते थे। अकबरको प्रतापकी तैयारी सुनकर बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसको ऐसी हिम्मत न थी कि राणाके ऊपर एकाएक चढ़ाई कर दे। प्रतापका प्रताप इतना तेज था कि अकबर जैसे शक्तिशाली बादशाह भी प्रतापसे लड़नेकी हिम्मत न रखते थे। अतः अकबरने पहले राणाको अपनी तरफ मिलानेकी तरकीब ढूंढ़ निकाली।

पहले अकबरने प्रतापके सहायकोंको एक एक करके [illegible] लेना उचित समझा। राजा मानसिंह गुजरात-

का विद्रोह शान्त करनेके लिये गये हुए थे। अकबरने उन्हें कहला भेजा कि लौटते समय प्रतापके सहायक ईडर और डूंगरपुरके राजाओंको हस्तगत करो तथा राणा प्रतापसे मिलकर उनकी भीतरी इच्छा जाननेकी कोशिश करो।

ईडरमें राणाके श्वसुर राजा नारायणदासका राज्य था और डूंगरपुरके राजा सिसौदिया वंशके थे। दोनों राजाओंने अकबरकी अधीनता माननेसे अस्वीकार किया। मानसिंहने लड़ाई छेड़ दी। युद्धमें राजा मानसिंहकी विशाल सेनाके आगे इन दो छोटे छोटे राजाओंका ठहरना मुश्किल था। वे हार गये। राणा प्रतापके दो अंग कट गये।

राजा मानसिंह डूंगरपुरको परास्त करके उदयपुर पहुँचे। अपने एक दूतको राणाके यहां यह कहलाकर भेजा कि मैं एक राजपूत भाईके नाते राणासे मिलना चाहता हूं। जब राणाको मानसिंहके आनेकी खबर मिली तो उन्हें इनके एकाएक आ जाने का मतलब मालूम न हुआ। राणा मानसिंह जैसे देशके शत्रु और

कलंकीसे मिलना नहीं चाहते थे। परन्तु हिन्दू धर्मकी मर्य्यादाका ख्याल कर आये हुए अतिथिका अपमान करना अधर्म समझा। राणाने मानसिंहसे भेंट करनेकी स्वीकृति दे दी। राणा मानसिंहकी अगुवानीके लिये उदयसागर तक गये। बड़े सत्कारके साथ मानसिंहको लाकर एक महलमें ठहरा दिया गया। राणाने कुमार अमरसिंहको मानसिंहकी आवभगत करनेके लिये नियुक्त किया। कुमार अमरसिंहने मानसिंहके लिये कुछ उठा न रखा। खानेके लिये तरह तरहके पकवान बनवाये गये। यथा समय कुमारने मानसिंहको भोजनके लिये निमंत्रित किया। जब सब लोग बैठ गये और भोजन सबके सामने रखा जा चुका, तब मानसिंहने कहा—'राजकुमार, राणाके, बिना मैं भोजन कैसे करूँगा ?'

कुमारने कहा—'महाराज, राणाजी किसी काममें उलझ गये होंगे। भोजन कीजिये, वह आते ही होंगे।

राजा मानसिंह राणाके न आनेका कारण समझ गये। वह जानते थे कि राणा उनके साथ भोजन न करेंगे।' मानसिंह क्रुद्ध हो गये और कहने लगे—'मैं

राणाके न आनेका कारण जानता हूं। जब तक वह नहीं आयेंगे मैं भोजन नहीं करूँगा।'

राणाके मंत्रीने कहा—'महाराजा, राणा जीके शिरमें दर्द है नहीं तो वह अवश्य आते। मानसिंह इन बातोंसे सन्तुष्ट न हुए। वे उठ गये और भोजन करनेसे इनकारकर दिया। अन्तमें राणाजी आये और कहने लगे—'महाराज, अतिथि सेवामें कोई त्रुटि हो गई है ?'

मानसिंहने उत्तर दिया—'आप घरमें बैठकर मेरा स्वागत करना चाहते हैं ?'

राणाने कहा—महाराज, आपके स्वागतके लिये मेरा पुत्र युवराज कुमार अमरसिंह मौजूद हैं।' 'परन्तु आपके रहते अमरसिंहको कोई अधिकार नहीं है।'

'मानसिंह, तुम मुझे मेरी मर्जीके खिलाफ अपने साथ भोजन करनेके लिये बाध्य नहीं कर सकते। तुमने अपनी बहिन-बेटियोंको अकबरके हाथ बेंचकर राजपूती शान मिटा दी। फिर भी तुम चाहते हो कि राणा तुम्हारे साथ बैठकर भोजन करें। मान, तुमने अपना मान खो दिया। यदि तुममें कुछ भी राजपूती शान

होती तो तुम्हीं बतलाओ कि तुम्हारी शक्ति और विजयके फल बिना अकबर दिल्लीके तख्तपर होता ?' प्रतापकी ये बातें मानसिंहके कलेजेमें बिध गईं। मानसिंहने कहा—प्रताप, याद रखना। इसका बदला देना पड़ेगा।

प्रताप—मैं इसके लिये तैयार हूं।

राजा मानसिंह दिल्ली पहुँचे। अपनी बीती अकबर को सुना दी ! यों तो अकबर मनमें बड़ा प्रसन्न हुआ, परन्तु ऊपरसे रोष दिखलाते हुए कहा—मानसिंह तुम्हारे अपमानका बदला अवश्य लिया जायगा। मान-सिंह तुरंत बदला लेना चाहते थे। अकबरने दूसरी बार राजा भगवानदासको राणाके पास भेजा। भगवानदास-को सफलता न मिली। राजा टोडरमल भी राणाके पास गये। किसीने राणाको अकबरसे समझौता कर लेनेके प्रयासमें सफलता न पाई। राणा अपनी प्रतिज्ञापर अटल रहे। बल्कि अपनी तैयारी और जोरोंसे करने लगे। अन्तमें जब अकबरने देखा कि राणाप्रताप किसी प्रकारसे उसकी अधीनता स्वीकार नहीं करते तो उसने भी प्रतापको नष्ट करनेकी ठान ली।

हल्दी-घाटीका युद्ध

मानसिंह वाली घटना बीते चार वर्ष हो चुके थे। अकबरने इतने दिनोंके बाद राणा प्रतापपर चढ़ाई करनेका निश्चय किया। जिस समय मेवाड़पर आक्रमण करनेकी तैयारी हो रही थी उसी समय काबुलमें भी विद्रोह हो गया। जोधपुरके राजा चन्द्रसेन, महोवेके राव राजा मेघराज तथा सरोहीके राजाओंने भी विद्रोहका झण्डा खड़ा कर दिया। राणाजीका हाथ इन विद्रोहोंमें अप्रत्यक्ष रूपसे कामकर रहा था। इस प्रकार मेवाड़को कुछ दिन और चैन करनेका मौका मिल गया। इन विद्रोहोंको दवानेमें अकबरको बड़ी कठिनाई हुई।

इधर राणाजी भी अपनी शक्ति भर तैयारी कर रहे थे। इनकी तैयारीमें क्या रखा था। मेवाड़ तो पहले ही उजाड़ और वीरान बन गया था। जो लोग बाकी बचे थे वे जंगलों और पहाड़ोंमें जा छिपे थे। मेवाड़-वासी अन्नके विना तरस रहे थे। पाठको! तुम सोचते होगे कि राणाने इतने पहले ही मेवाड़-वासियों

को अपनी बस्ती छोड़कर जंगलोंमें बस जानेके लिये क्यों बाध्य किया ? इसका कारण यह था कि मेवाड़का बहुत सा हिस्सा जिसमें चित्तौड़ गढ़का दुर्ग भी सम्मिलित था पहले ही से मुसलमानोंके हाथमें जा चुका था। मेवाड़का थोड़ा सा हिस्सा अब राणाजीके हाथमें था। जिस समय संम्राट अकबरकी विशाल सेना मैदानकी बस्तियोंसे होकर गुजरती उस समय मेवाड़वासियोंकी क्या दशा होती ? मेवाड़का बच्चा बच्चा मोगल कबिलेके हाथसे मारा जाता। स्त्रियोंके ऊपर नाना तरहके अत्याचार होते। गाँव घर जला दिये जाते। उनके अन्न लूट कर फौजकी खाद्य सामग्री बनाई जाती। इस लियें राणाजीने पहले ही से ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी थी कि मेवाड़में अकबरकी फौजको एक दाना भी न मिल सकें। मेवाड़का अन्न लूट कर मेवाड़ वासियोंसे लड़नेकी रीतिको राणाजीने अपनी चातुरीसे बन्द कर दिया। पुनः जङ्गल पहाड़ोंमें स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षा तो हो ही सकती थी। मोगल कबिले अर्वलीके जङ्गली घाटियोंसे अपरिचित थे। उसमें घुसना उनके लिये

३

मुश्किल था।

अन्तमें अकबरने सन् १५७६ की ३ री अप्रैलको मानसिंहको मुगल सेनाका सेनापति बनाकर मेवाड़ विजयके लिये भेजा। राजा मानसिंहके साथ शक्तिसिंह और राजा जगन्नाथ भी थे। मुसलमान सरदारोंमें सैयद हशीम, सैयद अहमद खाँ, गाजीखान बदख्शाई तथा मुहब्बत खां थे। मानसिंह अपनी विशाल सेनाको लेकर अजमेरसे ७० मील दूर मण्डलगढ़में जाकर अपना पड़ाव डाले। यहाँ कुछ दिनों ठहरकर तथा भोजनकी सामग्रीका प्रबन्ध करके जून मासमें गोगुन्दाकी तरफ बढ़े। मानसिंहके विलम्ब करनेका एक यह कारण था कि वे राणा प्रतापसे मैदानमें ही लड़ना चाहते थे। इसी लिए अप्रैल मासमें प्रस्थान करनेके बाद हल्दी घाटी तक पहुँचनेमें उन्हें चार पाँच मास बीत गये। मानसिंहके पास सेना बहुत थी और राणाजीके पास उतनी सेना कहांसे आती। अतः मैदानमें आमने सामनेकी लड़ाईमें राजपूतोंकी सेना बिल्कुल समाप्त हो जाती।

राणा प्रतापको भी अप्रैल मासमें ही मानसिंहकी

युद्धयात्रा का पता चल गया था। जन्मभूमिकी लाज रखनेके लिये तथा अपने पूर्व पुरुषोंके पवित्र गौरवको निष्कलङ्क बनाये रखनेके लिये मेवाड़के वीर सिपाही केसरिया बाना पहिनकर मुगलोंसे लड़नेके लिये तैयार होने लगे। कोई भी परिवार ऐसा न था जिसके घरसे एकाध आदमी इस पवित्र युद्धमें भाग लेनेके लिये आगे न आया हो ?. सब कुछ तैयारी करनेपर भी राणाके पास केवल तीन हजार निपुण सिपाही मिल सके। पहाड़ोंमें रहनेवाले भीलोंकी संख्या तो काफी थी। भीलोंके हथियार विचित्र थे। पहाड़ोंपरसे तीर चलानेकी क्रियामें ये बड़े सिद्ध हस्त थे।

मानसिंहने जब देखा कि राणा प्रताप मैदानमें नहीं आ सकते तब अपना क़दम बढ़ाया। वह हल्दी-घाटीके निकट गोगुन्दासे उत्तर कुछ मीलकी दूरीपर अपना पड़ाव डालकर प्रतापकी बाट देखने लगे। राणा भी धीरेसे कुम्भलगढ़ छोड़कर हल्दीघाटीमें उतर आये। मानसिंहको राणाके आनेका बिल्कुल पता न था। ऐसी स्थितिमें राणाजी चाहते तो मानसिंहके ऊपर एका-एक

धावा करके उन्हें परास्त कर देते। एक दिन मानसिंह एक हजार सैनिकोंको लेकर जंगलोंमें शिकार खेलनेको गये हुए थे। ऐसे सुन्दर अवसरपर मानसिंहकी छावनी पर अन्धेरी रातमें छापा मार कर नष्ट भ्रष्ट किया जा सकता था। परन्तु वृद्धझाला सरदारने इस कार्य्यको राजपूती शानके विरुद्ध समझा। मानसिंहको हल्दीघाटीमें उतरनेका तनिक भी साहस नहीं था। हल्दीघाटीका मैदान अरावली पहाड़की ऊँची श्रेणियोंसे चारों ओर घिरा हुआ है। आने जानेके केवल तीन तङ्गरास्ते हैं। यदि मानसिंह इस घाटीमें आकर राणाजीसे लड़ते तो निसन्देह वह हार जाते। इस बातको मानसिंह स्वयं समझते थे।

इधर राजपूती सेना भी धैर्य न रख सकी। अगर थोड़े दिनों तक राणाकी सेना और ठहर जाती तो मानसिंहको स्वयं छापा मारना पड़ता। इस प्रकार पहाड़ियोंकी चोटियोंसे उस छापेका अच्छा-सा उत्तर दे सकते। एक्कीस जून सन् १५७६ के दिन राणा प्रताप अपने चुने हुए सैनिकोंके साथ मानसिंहकी सेनापर टूट

पड़े। लड़ाई शुरू हो गई। राजपूत वीरोंने मुगल सेनाके अग्र भागपर हमला किया। मुगलोंकी सेनाके साथ मुहब्बत खाँ थे। राणाकी सेना 'हर हर महादेव' के विनोदोंसे आकाश मण्डलको गुञ्जाते हुए मुगलोंकी सेनाको नष्ट करने लगी। तलवारकी लड़ाईमें राजपूतोंसे जीतना मुश्किल था। राणा प्रताप स्वयं हाथमें नङ्गी तलवार लिए हुए आगे आगे लड़ रहे थे। मुगल सेनाके पैर उखड़ गये। लोग इधर-उधर भागने लगे। मुगल सेनाका व्यूह टूट गया। दक्षिण और वाम पार्श्वके सैनिक भाग खड़े हुए यदि थोड़ी देर और ऐसी ही अवस्था होती तो सम्भव था कि मुगलोंकी हार हो जाती। परन्तु मुगलोंकी बची फौज आ पहुँची और मुगल दलकी तरफसे यह शोर किया गया कि सम्राट अकबर स्वयं फौज लेकर आ रहे हैं। अतः मुगलोंकी सेनाको धैर्य हुआ और वे जमकर लड़ने लगे। इधर राजपूत सैनिक भी लड़ते लड़ते बीचमें आ पहुँचे थे। ये चारोतरफसे मुगल सैनिकोंसे घिर गये।

मानसिंहने अच्छा मौका देखा और तोपोंकी

आवाजें होने लगीं। तोपोंके सामने राजपूतोंका ठहरना मुश्किल था। राजपूत वीर झुण्ड-के-झुण्ड हताहत होने लगे। राणाजीने देखा कि उनके सभी सैनिक तोपोंसे नष्ट हो जायेंगे। इस लिये अपने सैनिकोंको शत्रुओंसे तोप छीन लेनेकी आज्ञा दी। राजपूत वीरोंकी शवोंसे तोपोंके मुख बन्द हो गये। परन्तु हजारोंकी संख्यामें राजपूतवीर धराशायी हो गये।

राणाजीने सोचा कि अब मरनेके सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं है। इसलिये मरनेके पहले मानसिंहसे भेंट कर लेना आवश्यक है। मानसिंहकी तलाशमें राणा नङ्गी तलवार लिये हुए घूमने लगे। मानसिंह शरीर रक्षकोंसे घिरा हुआ एक हाथीपर बैठा था। उसके निकट पहुँचना दुस्तर था। फिर भी राणाने चेतकको बढ़ाया। चेतक राणाके इशारेको समझ कर ऐसा बढ़ा कि उसके अगले पैर बातकी बातमें हाथीके मस्तकपर पहुँच गये प्रतापने बर्छा चलाया पर दैवयोगसे वह महावतके लगा और वह मर गया। मानसिंहको उसका हाथी बचाकर भाग निकला। राणाजी शत्रुओंसे घिर

गये थे। वह अकेले ही अपने चारों तरफ खड़ी मुगल सेनाको काटने लगे। चेतकके पैरमें हाथीके मस्तकपर जड़ा हुआ एक कीला चुभ गया था। राणाजीका शरीर भी घायल हो चुका था। वह बिल्कुल थक गये थे। वह अकेले ही इतना आगे बढ़ गये थे। सरदार झाला मालाने देखा कि राणाजी बुरी तरहसे फँस गये हैं। उनकी प्राणरक्षा करना आवश्यक है। सरदारने सोचा कि राणाका जीवित रहना आवश्यक है। इसलिये आगे बढ़कर राणाका छत्र उन्होंने स्वयं ले लिया और मुगल सेनाको अपनी तरफ ललकारा।

मुगल सेनाने राज-छत्र धारण किये हुए सरदार झालाको ही राणा प्रताप समझकर टूट पड़ी। राणा प्रतापको यह अच्छा न लगा। परन्तु झाला सरदार कहने लगे कि आपकी मृत्युसे मेवाड़के बच्चे अनाथ हो जायेंगे। मेवाड़का यह महायज्ञ आपके बिना सफलीभूत न हो सकेगा। प्रतापको झालाकी बातें माननी पड़ीं। झाला सरदार अपने दोनों हाथोंमें तलवार लेकर शत्रुओं-का संहार करने लगे। वह वीर सरदार अकेला लड़ता

हुआ अमरलोकको सिधार गया।

झाला सरदारके वंशजोंका आज भी राजपूतोंमें बड़ा मान है। राणा प्रतापने उनके वंश वालोंको काफी जागीर भी दी। इस युद्धमें ग्वालियरके राजा रामशाहने भी बड़ी वीरता दिखलाई थी। इनके तीन पुत्र इस लड़ाईमें काम आये और अन्तमें लड़ते हुए स्वयं भी वीर गतिको प्राप्त हुए।

संध्या होते होते मेवाड़ियोंकी शक्ति कम हो गई। आखिरकार मुट्ठीभर सेना विशाल मुगल सेनाके सामने कब तक ठहरती। राजपूत वीर सचमुच वीर थे। यह उन्हींका काम था कि इतनी थोड़ी संख्यामें रहते हुए भी हजारों मुगलोंको मारते हुए मरे। संसारके इतिहासमें ऐसे उदाहरण शायद ही मिलेंगे जहाँ इतने निःस्वार्थ व्याजके साथ अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये लोग जान देदें।

राजपूतसेना हल्दी घाटीसे हट गई परन्तु राजपूतोंने इसे पराजय नहीं माना। क्योंकि राणा प्रतापने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। हाँ, राजपूत सिपाही बहुत बड़ी संख्यामें हताहत हुए। मुगलोंकी भी सेनाका

नाश हुआ। किसी दलने न अपना विजय समझा और न पराजय। राणा प्रताप भी पुनः युद्ध करनेके ख्यालसे पहाड़ोंकी तरफ चले जा रहे थे। वह इस समय अकेले थे। सारा शरीर क्षत विक्षत हो चुका था। उनका स्वामिभक्त घोड़ा चेतक घायल हो गया था और अपनी अन्तिम सांसें ले रहा था। इसी समय दो वीर मुगल सिपाही राणाको मारनेके लिये घोड़ा दौड़ाये हुए चले आ रहे थे। राणाके लिये यह भी संकट का समय था। चेतकमें अब शक्ति न रह गई थी परन्तु राणाने चेतकको बढ़ाया और एक छोटेसे नालेको एक ही टापमें चेतक फांद गया। फिर भी मुगल सिपाही निकट होते जा रहे थे। इस घटनाको शक्तिसिंह जो प्रतापके छोटे भाई थे देख रहे थे। प्रतापको विपद्ग्रस्त देखकर उनका भ्रातृ भाव उमड़ पड़ा। शक्तिसिंहने राणा प्रतापको पुकारा। राणाने उलटकर देखा तो शक्तिसिंह घोड़ा दौड़ाये हुए आ रहे हैं। वे समझ रहे थे कि शक्तिसिंह बदला लेना चाहते हैं। इस ख्यालसे राणा घोड़ेसे उतरकर शक्तिसिंहका इन्तजार करने लगे। इतनेमें मुगल

सिपाही और निकटतर पहुँच गये। शक्तिसिंहने अपना घोड़ा उन मुगल सिपाहियोंके ऊपर दौड़ाया। बड़ी वीरताके साथ उनका सामना करके उन्हें मार डाला। इसके बाद शक्तिसिंह राणाके पैरोंपर जा गिरे। दोनों भाई गलेसे लिपट गये। यह भाई भाईका मिलन बहुत दिनके बाद हुआ। शक्तिसिंहको बड़ा गहरा शोक हुआ कि इस युद्धमें अपने भाईका साथ न देकर शत्रुओंका साथ दिया। परन्तु शक्तिसिंहने इस समय राणाको खूब धैर्य दिलाया। उन्होंने कहा कि राणाजी आपकी वीरता और आत्मत्यागकी कहानी भारतके कोने कोनेमें ध्वनित हो रही है। आपने राजपूती और हिन्दुवानी शानको बचा लिया। जिन हिन्दू राजाओंने अकबरका साथ दिया है वे कलंकी और कायर हैं परन्तु उनके मनमें भी आपके प्रति असीम भक्ति और श्रद्धा है।

शक्तिसिंहने अपना घोड़ा राणाको दे दिया। चेतककी वहीं मृत्यु हो गई। चेतककी मृत्युपर राणाको बड़ा शोक हुआ। चेतकने राणाको बड़ी कठिन परिस्थितियोंमें बचाया था। चेतकको राणाजी भाईकी तरह प्यार

करते थे। वे बच्चोंकी तरह रोने लगे। शक्तिसिंह भी खूब रोये।

चेतकका नाम भारतके इतिहासमें अमर हो गया। राणाने उसकी यादमें एक स्तम्भ बनवाया। वह हल्दी घाटीसे दो मील दूर बलिया गाँवके निकट विराजमान है।

राणाके समीपसे शक्तिसिंह लौटे तो शाही फौज आनन्दमें मग्न थी। सब लोग राणाकी मृत्यु या कैद होनेका समाचार सुननेकी प्रतीक्षामें बैठे थे। मगर शक्तिसिंहको अकेले आते हुए देखकर मुगल सेनापतिकी आशापर पानी फिर गया। शक्तिसिंहने सारी घटना कह दी। शक्तिसिंह मुगल फौजसे निकाल दिये गये।

मानसिंहका मान-मर्दन

राणा प्रतापकी सेना हल्दी घाटीकी लड़ाईमें तितर बितर हो गई। अधिकांश लोगोंने लड़ते हुए अपने प्राण त्याग दिये। मुगलोंकी तरफ भी हजारों आदमी मारे गये। मुगलोंका अधिकार मेवाड़के मैदानों तथा शून्य बस्तियोंपर हो गया था। परन्तु मेवाड़के वासी अर्वलीकी

गुफाओंमें जा छिपे थे। राणाकी तो कोई बात ही नहीं थी। दूसरे अवसरकी ताकमें थे और जहाँतक हो सकता था अपनी तैयारी कर रहे थे।

अकबरको बड़ा दुःख हुआ। मुगल साम्राज्यकी सेनाको थोड़ेसे राजपूत छिन्न भिन्न कर दें यह बादशाहके लिये असह्य था। राणा प्रताप अकबरकी शरणमें आ जाते तो उस निराशामें आर्य्य जातिका गौरव सदाके लिये समाप्त हो जाता। दूसरे हिन्दू राजा अकबरकी सत्ता स्वीकार करके आर्य्य धर्मपर कलंकको टीका लगा चुके। अपनी बहिन बेटियों तकको अकबरके हाथमें सौंप कर वे हिन्दू-जातिकी लाजको खो चुके थे। हिन्दुत्वका पतन इतना कभी न हुआ था। सारे भारतवर्षकी आँख एक प्रतापके ऊपर लगी हुई थी। वही अकेला एक ऐसा वीर था जो सब कुछ त्याग करके अपने धर्म और मानकी रक्षामें अटल रहा। यही कारण था कि मेवाड़की वीर जातियोंने तथा रण-शूर सरदारोंने हजारोंकी संख्यामें अपने प्राण देकर राणाकी जान बचाई थी। राणाकी रक्षा हिन्दू धर्मकी रक्षा समझी जाती थी।

प्रताप भी अपने जीवनका मूल्य समझते थे। अपने प्राणोंकी रक्षा करनेमें उन्होंने राजपूतोंकी, हिन्दुओंकी तथा आर्य्य धर्मकी विजय देखी। नहीं तो अपने प्रियजनोंके साथ हल्दी घाटीमें ही अपने प्राणोंकी बलि चढ़ा देते।

इधर अकबरने भी मेवाड़की उजाड़ और वीरान भूमिको मुगल साम्राज्यमें मिलानेकी आशासे नहीं बल्कि राणा प्रतापके मानको मर्दन करने तथा अपने आश्रयमें करनेके लिये ही इतनी विशाल सेना भेजी थी। प्रतापकी बन्दीमें ही अकबर अपनी विजय समझता था। इसलिये हल्दी घाटीकी जीतको अकबरने जीत नहीं समझी। वह जानता था कि समय पाकर राणा फिर चोट करेगा। इसलिये अकबरकी इच्छा मेवाड़की भूमि जीतनेकी नहीं परन्तु प्रतापको बन्दी करनेकी थी। हल्दी घाटीकी लड़ाईमें राजपूतोंकी अपेक्षा मुगलोंकी सेना अधिक नष्ट हो गई थी। मुगल सेनाके पैर उखड़ गये थे। कमर टूट गई थी। नहीं तो यह कैसे सम्भव था कि मानसिंह राणा प्रतापको पकड़वानेके लिये

मुगलोंको भेजते। राजपूतोंकी वीरतासे मुगलोंकी आत्मा काँप उठी थी समक्षकी लड़ाई में राजपूतोंने अपने शौर्य्य को दिखला दिया था।

मानसिंह इस विजयकी शावासी लेनेको बड़ा उत्सुक था। लौटते समय गोगुन्दा रास्तेमें पड़ता था। मानसिंहने उसपर कब्जा कर लिया। परन्तु गोगुन्दाके कब्जेमें कुछ हाथ न लगा। गोगुन्दा पहलेहीसे जनहीन वना दिया गया था। जो कुछ राजपूत वच गये थे उन लोगोंकी अपने सरदार श्रीचन्द्रके नेतृत्वमें मुगल सेनाके साथ लड़ाई हुई। लोग जी खोलकर लड़े। थोड़ेसे राजपूतोंने वची वचाई मुगल सेनाके दाँत खट्टे कर दिये। मुगलोंके हाथमें मेवाड़को जाता देख राजपूतोंने मर जाना ही अच्छा समझा।

गोगुन्दापर कब्जा करनेके बाद थोड़े दिनों तक मानसिंह वहीं रह गये। उनके रहनेका अभिप्राय यह था कि मौका देखकर राणा प्रतापको पकड़ा जाय। परन्तु मानसिंहकी यह इच्छा इच्छा ही रह गई। राणा प्रतापको पकड़ लेना आसान नहीं था। पहाड़ियोंमें

जाकर राणाको पकड़ना या लड़ना असम्भव था। काफी दिन बीत गये और प्रतापके पकड़नेकी सभी चेष्टायें विफल हो गईं। मानसिंह भी बड़े असमंजसमें पड़े। चारों ओर उजाड़ भूमि थी। अन्न खतम हो गया। मैदानसे रसद आने में भी रास्ता साफ नहीं था राणाके सैनिक रसद लूट लेते थे।

मानसिंहने बड़े समारोहके साथ विजयका समाचार दिल्ली भेजा। जब मुगलोंकी जीतका समाचार दिल्लीमें पहुँचा तो लोगोंको विश्वास नहीं होता था कि राजपूत हार गये। क्योंकि लोग राणाको अजेय समझते थे। अकबरको इस समाचारसे प्रसन्नता तो हुई परन्तु जब प्रतापके नहीं पकड़े जानेकी बात उसके कानोंमें पड़ी तो उसका चेहरा बदल गया। वह विजयकी बात भूल गया और प्रतापके अभी तक स्वतन्त्र रहनेकी बातसे व्यग्र हो उठा। उसे तनिक भी विश्वास नहीं था कि हारने के बाद भी प्रताप मुगल सेनासे बच सकता था। राणा प्रतापके बन्दी नहीं होनेसे अकबरने विजयको पराजय समझा। मानसिंहकी मनोकामना पूरी न हुई।

अकबरने मानसिंहको धन्यवादके दो शब्द तक नहीं लिखे। मानसिंह पर वह क्रुद्ध भी हुए। कुछ दिनोंके बाद ही जब अकबर अजमेर गया तो मानसिंहको उसने दरबारमें नहीं बुलाया। हल्दी घाटीके युद्धके बादसे मानसिंह अकबरकी नजरोंमें गिरते गये।

अकबरका मेवाड़के लिये प्रस्थान

हल्दी घाटीके युद्धमें मानसिंहकी असफलताका बड़ा गहरा असर बादशाहके ऊपर हुआ। बादशाह मानसिंह को बहुत मानते थे। मानसिंहने भी अकबरके लिये दुर्भेद्य और अजय प्रान्तोंको जीतकर अपना सिक्का जमा लिया था। मानसिंह जहाँ कहीं भी गये असफल होकर नहीं आये। परन्तु प्रतापके आगे मानसिंहकी कुछ न चली। अकबरने सोचा मानसिंह भी राजपूत है। उसने प्रतापके पकड़नेका यत्न नहीं किया। अब मानसिंहसे बढ़कर शक्तिशाली सरदार अकबरके पास कौन था जिसे वह प्रतापपर विजय प्राप्त करनेके लिये भेजता। अकबरने स्वयं मेवाड़ चलकर अपने नेतृत्वमें युद्धका संचालन करनेका आयोजन किया। इसबार साम्राज्यकी

सारी शक्ति लगाकर प्रतापके मानको मटियामेटकरनेका संकल्प अकबरने किया। एक विशाल सेनाके साथ अकबरने मेवाड़के लिये प्रस्थान किया। दस दिनमें सारी फौज अजमेर आ पहुँची।

सारा राजपूताना उस फौजको देखकर काँप गया। लोग सोचने लगे कि एक राणाके लिये जिसके पास बैठनेको स्थान नहीं, खानेके लिये अन्न नहीं तथा लड़नेके लिये एक सिपाही नहीं उसके ऊपर इतनी बड़ी सेना लेकर स्वयं अकबरके आनेकी क्या जरूरत थी। परन्तु राणा प्रताप और अकबर अपने अपने मनमें इसका रहस्य समझते थे। राणा प्रताप अपनी प्रतिज्ञाका मूल्य देखकर प्रसन्न हुए। राणाने अकबरकी विशाल सेनाको देखकर अपना संगठन फिरसे करनेका निश्चय किया। अकबरकी शरणमें गये हुए राजपूतोंको फिरसे अपनी तरफ मिलानेकी क्रिया प्रतापने शुरू की।

सबसे पहले ईडरके राजा नारायण दासको प्रतापने विद्रोहके लिये उकसाया। इसके बाद सरोहीके राव सरतानको भी अपने पक्षमें किया। जोधपुरके राजा राव

चन्द्रसेन भी प्रतापका साथ देनेके लिये राजी हो गये। बूँदीका राजकुमार दुर्जनशाल भी अपने पिता और भाईको छोड़कर राणाके साथ आ गया। उदयपुरमें जाकर राणाने प्रजाओंको अपने पक्षमें होनेके लिये प्रोत्साहित किया। इधर मानसिंह अकबरके अजमेर आनेकी खबर सुनकर उससे मिलनेके लिये अजमेरको चल पड़े। राणा प्रतापने मौका पाकर गोगुन्दापर फिर कब्जा कर लिया। मेवाड़के दूसरे कई दुर्गों और स्थानोंपर अपना अधिकार जमा लिया। इसी समय मक्का और मदीनाके लिये यात्री जाया करते थे। उनके रास्तेमें गोगुन्दा पड़ता था। अकबरको उन यात्रियोंकी रक्षाके लिये अब चिन्ता खड़ी हो गई। परन्तु राणा प्रतापसे लड़नेके पहले उनके सहायकोंको परास्त करना अकबरने अच्छा समझा।

तार सूरखां और रामसिंहको जालौर और सरोहीके राजाओंको दबानेके लिये भेजा। कुतुबुद्दीन और आसफखां को ईडरके राजा नारायणदाससे लड़नेके लिये भेजा। मक्के मदीने जानेवाले यात्रियोंकी रक्षाका भार भी इन्हीं दो सरदारोंको दिया गया। राणाने

यात्रियोंसे छेड़ छाड़ नहीं की। पिण्डवाड़ासे राजा भगवानदास भी चले। इस प्रकार तीनों वीर सरदार विशाल मुगलोंकी सेना लेकर गोगुन्दा आ पहुँचे। राणा प्रताप उन दिनों गोगुन्दामें ही थे। मुगल सेनाने एकाएक गोगुन्दाको घेर लिया। राणा प्रतापके पास उन दिनों सिपाही न थे। हल्दी घाटीके युद्धमें मेवाड़के इने गिने वीर सिपाही और सरदार मार डाले गये थे। फिर भी राणा जी की प्राण-रक्षाके लिये वीर मेवाड़ियोंकी कमी नहीं थी। देखते-देखते हजारों राजपूतवीर युद्धमें मृत्युका आलिंगन करनेके लिये तैयार हो गये। राजपूत जी खोलकर लड़े। एक एक राजपूतने दस दस मुगलोंका काम तमाम किया। इस युद्धमें राजपूतोंके दो हजार वीर काम आये। लगभग दस हजार मुगल सैनिकोंकी लाशें गोगुन्दामें बिछ गईं। गोगुन्दा पुनः मुगलोंके हाथ लग गया। परन्तु राणा प्रताप उनके हाथ न लगे।

अकबरने अजमेरसे चलकर अपना डेरा गोगुन्दामें जमाया। गोगुन्दामें रहकर ऐसा फन्दा डालना चाहता था कि प्रताप कहीं भी हो उसमें आ फंसे। कुतुबुद्दनी

और मानसिंहको वहाँ नियत कर अकबर मोदीकी तरफ बढ़ा। मोदीमें गाजीखान बदख्शाईको तैनात किया। मेवाड़पर मुगल सेना मकड़ीके जालेकी तरह फैल गई थी। चार बड़े-बड़े सैनिकदल चतुर सेनापतियोंके नेतृत्वमें प्रतापकी घातमें बैठे थे। अकबर उदयपुरकी तरफ बढ़ा। उदयपुरपर उसने आसानीसे कब्जा कर लिया। वहाँ भी सेनाके एक मजबूत दलको तैनात कर वह मालवाकी तरफ बढ़ा। बासवाड़ाके सिसौदिया वंशज रावलको अकबरने बातकी बातमें जीत लिया। डोंगरपुरके राजाको अपने आधीन किया। इस प्रकार अकबरने राणाके सभी सहायकोंको अपने आधीन कर लिया। वह समझता था कि राणा निःसहाय होकर उसकी शरणमें आ जायगा। प्रति दिन सुबह अकबर प्रतापके बन्दी होनेकी खबर सुननेको उठता और दिन भरकी आशाके बाद रातको निराश होकर सो जाता। किसी भी दूतको कहींसे आता हुआ देख कर अकबर यही सोचता कि हो न हो यह प्रतापके पकड़े जानेकी खबर ही लेकर आता होगा। ....

राणा प्रताप न तो अकबरकी शरण आये और न कहीं छिपकर बैठे रहे। हाँ, अपने परिवारकी रक्षाके लिये कई बार गरीब भीलोंकी झोपड़ियोंमें रातें व्यतीत करनी पड़ीं। जङ्गलकी घनी झाड़ियोंमें ठौर लेना पड़ा, अरावलीकी गुफाओंमें प्यासे और भूखे रहकर दिन बिताने पड़े फिर भी मौका पाते ही वह मुगल सेनाकी मेवाड़ भरमें बिखरी हुई टुकड़ियोंपर अचानक हमला कर बैठते थे। इनके पास न सेना, न दुर्ग और न धन था। केवल इने गिने साथी रह गये थे। उन्हींकी सहायतासे वह मुगल सेनाके नाकोंदम किये हुए थे। दिल्लीसे सूरत जानेका मार्ग भी सुरक्षित नहीं था। अवसर देखकर ये शाही खजानेको लूट लेते थे। केवल लूट मार ही नहीं करते थे। बल्कि अकबरके आधीनमें आये हुए राजपूत राजाओं और सरदारोंको बराबर उभाड़नेकी कोशिश भी करते रहते थे। सरोही और ईडरके राजाओंने फिर बगावत की। गोगुन्दामें फिर विद्रोहकी अग्नि भड़क उठी। बूँदीका राजा दुर्जनशालने भी अकबरकी अधीनता स्वीकार नहीं की। राजा भगवानदास और

मानसिंहसे लेकर मुगल सेनाके प्रत्येक सैनिकोंने मेवाड़के कोना कोना ढूँढ़ डाला, लेकिन राणा प्रतापको न पा सके।

शाहबाजखाँकी परेशानी

मेवाड़से अकबरके चले जानेके बाद राणा प्रतापने फिर सिर उठाया। मौका पाते ही उन्होंने फिर मुगलोंके आधीन दुर्गोंपर अधिकार करना शुरू कर दिया। दुर्गोंमें पड़ी हुई मुगल सेनाको बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। उनकी रसद आनी बन्द हो गई। समय असमय राजपूतोंके हमले होने लगे। मानसिंहकी फौज जब तक मेवाड़में थी तब तक मुगलोंकी खैर रही। मानसिंहके जाते ही राजपूतोंने आक्रमण कर दिया। मोहीका मुगल सरदार मारा गया। यह सितम्बर १५७७ की बात है। धीरे धीरे गोगुन्दा और उदयपुरके मुगल सैनिक भी राणा प्रतापसे परेशान हो उठे। अकबरने जब राणाके सिर उठानेकी बात सुनी, तब उसका खून खौल उठा। तुरन्त ही उसने विशाल सेनाके साथ मेवाड़की ओर

प्रस्थान करनेका आदेश दिया। यह विशाल सेना शाहबाजखाँ, राजा भगवानदास, राजा मानसिंह, सैयद कासिम, सैयद हाशिम, सैयद राजू, मुहम्मद प्यादा खाँ और गाजीखाँ बदख्शाईके नेतृत्वमें चली। जब फौज मेवाड़ पहुँची तो राणा फिर जंगलोंमें चले गये।

कुम्भल गढ़का दुर्ग उदयपुरसे ४० मील दूर एक दुरूह पहाड़ीपर स्थित है। इससे पूर्व मुगल सेनाने इसपर विजय प्राप्त करनेका प्रयत्न नहीं किया था। दुर्गके चारों ओर ऊंची दीवार है। इसके मार्ग कठिनाईसे समझमें आनेवाले हैं। राणाप्रताप इसी दुर्गमें थे। शाहबाजने केलवाड़ाको जीतकर कुम्भलगढ़के ऊपर चढ़ाई कर दी। दुर्गके बाहर घोर युद्ध हुआ। मुगल सेनाकी जीत रही। शाहबाज समझता था कि राणा प्रताप कैद हो जायगा, परन्तु राणा प्रताप अपने बाल बच्चों सहित दूसरे दुर्गमें चले गये थे। एक देश द्रोहीके द्वारा राणाका पता कोमलमीरके किलेमें लग गया। शाहबाजने कोमलमीरको आ घेरा। उस देश द्रोहीने शाहबाजको विश्वास दिलाया कि कोमलमीरपर सामान्य युद्धसे

विजय पाना असम्भव है। उसने कहा कि इस दुर्गमें पानीकी कमी है। यहां बहुत कम पहाड़ी चश्में हैं। यदि इन चश्मोंमें जहर डलवा दी जाय तो राजपूत बिना युद्धके ही दुर्गको खाली कर देंगे। शाहबाजको यह युक्ति पसन्द आई। किसी उपायसे कोमलमीरके सब चश्मों-में ज़हर डलवा दिया गया। राजपूत लोग पानी पी-पी कर जान देने लगे। पानीके अभावसे आखिर राज-पूतोंको वह किला छोड़ना पड़ा। राणा प्रताप भी परिवार समेत बांसवाड़ा चले गये।

बांसवाड़ापर भी शाहबाज चढ़ दौड़ा। वहां भी राणाको विश्राम न मिला। वहांसे वह सूर्य महलके किलेमें चले गये। शाहबाजने वहां भी उनका पीछा किया। परन्तु राणा प्रताप यहांसे भी भीषम गढ़ चले गये। शाहबाज छायाकी तरह राणाका अनुसरण कर रहा था। उसका उद्देश्य दुर्गों पर विजय पाना उतना नहीं था जितना कि राणा प्रतापको कैद करना था। बहुत जल्दी ही वह सेना समेत भीषम गढ़ पहुंच गया। यहां राजपूतों की संख्या केवल पांच सौ थी। मुगलोंकी संख्या कई

हजारके लगभग थी। दुर्ग रक्षक सरदार तेजसिंहने देखा कि राणा और उनके बच्चोंकी रक्षा सर्व प्रथम करनी चाहिये। मुगल सेना सावन भादोंकी घटाके समान उमड़कर दुर्गको घेरा चाहती थी। उस तूफानको चीर-कर बच्चोंकी रक्षा करना असम्भव था। मुगलोंके आक्रमणको कोई कुछ देरतक रोक लेता, तो सम्भव था कि राणाका परिवार इस बीचमें मुगल सेनाकी नजर बचाकर निकल जा सकता। तेजसिंहने अपने प्रिय पुत्र चन्दन सिंहको बुलाकर कहा कि "पुत्र! इस समय राणाकी प्राण रक्षा करना ही हमारा परम धर्म है। उन्हींके जीवनसे जातिका जीवन है। आज रात भर यदि तुम मुगलोंके प्रहारको सँभाल लो, तो मैं रातोरात राणाको गुप्त मार्गसे ले जाकर सुरक्षित स्थानपर पहुँचा दूँगा।"

चन्दन सिंहने अपने पिताकी आज्ञा मानकर रातभर मुगलोंको दुर्गमें न आने देनेकी प्रतिज्ञा की। मुगलोंकी सेना शीघ्रही किलेपर आ टूटी। चन्दन सिंह मुट्ठीभर राजपूतोंको हिस्सोंमें बांटकर मोर्चेपर खड़ा रहा। घोर युद्ध हुआ। मुगल सेना किलेकी दीवारोंको गिराकर

किलेमें प्रवेश करना चाहती थी। परन्तु चौदह सालके बालक चन्दनने उस बाढ़को रोक रखा। सूर्योदय होने-पर चन्दन सिंहने किलेकी बुर्जपर चढ़कर देखा तो मुगल सेना टिड्डी दलकी तरह दुर्गके चारों ओर बिछी हुई थी। राजपूत मुगलोंकी सेना पर टूट पड़े। विजय मुगलोंकी हुई। परन्तु मुट्ठीभर राजपूतोंने हजारों मुसलमानोंको मारकर ही अन्तमें प्राण विसर्जन किये। भीषम गढ़ शाहबाजके अधिकारमें आ गया। राणा प्रताप बन्दी नहीं हुए। शाहबाज सिर धुनता रह गया। राणा प्रताप चौंधपुर चले गये थे। शाहबाज वहाँ भी पहुँच गया। यह स्थान भी असुरक्षित देखकर राणा प्रताप यहाँसे हट गये। शाहबाज यहाँ भी अपना सिर धुनता रह गया। राणा इसके बाद उदयपुरके जंगलोंमें चले गये। जंगलोंमें भी शाहबाजने राणाका पीछा किया। शाहबाज ने समझ लिया कि राणाका पीछा करना मृगतृष्णाके ही समान है। उसकी परेशानी हद दर्जे तक पहुँच गई थी। अब वह किसी न किसी बहाने इस पहाड़ी इलाकेसे अपना जी छुड़ाकर भागना चाहता था। बूँदीके विद्रोही

राजा दुर्जन शालको अकबरकी अधीनता स्वीकार करवा कर शाहवाज खाँने अपने कामोंको समाप्त करना चाहा। कुम्हल गढ़ तथा अन्य किलोंकी विजय भी अकबरको खुश करनेके लिये काफी था। अतः शाहवाज खाँ १५७८ के जून महीनेमें मेवाड़ छोड़कर चल दिया। तीन महीनोंमें उसने मेवाड़के पचास किलोंपर मुगलोंका झण्डा फहरा दिया। परन्तु प्रतापका बाल भी बाँका न हुआ।

राणा प्रतापने हिन्दू जातिकी रक्षा करनेके लिये आर्य्य आदर्शको पवित्र बनाये रखनेके हेतु सैकड़ों कष्ट सहे। उनका प्रण था—"चित्तौड़को मुगल सम्राटकी अधीनतासे निकालकर मेवाड़पर स्वाधीन शासन करना।" अपनी मृत्युके पहले वह अपने व्रतको पूरा कर लेना चाहते थे। अरावलीकी कोई गुफा ऐसी नहीं थी, जिसने अपने राणाको आश्रय नहीं दिया हो। राणा मेवाड़के तिनके तिनकेको प्यार करते थे। मेवाड़का तिनका भी इन्हें प्यार करता था। अकबरने साम्राज्यकी सारी शक्ति राणाको बन्दी करनेमें लगा दी। उसने यह घोषणा की

थी कि जो व्यक्ति राणाको पकड़ कर लायगा, वह सल्तनतके दसवें हिस्सेका हकदार होगा। मुगल सेनापति जो अपनी शानी नहीं रखते थे, जिन्होंने बड़े बड़े युद्धोंमें विजय प्राप्त की थी, अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर भी राणाको पकड़नेमें कामयाब नहीं हुए।

जंगलमें राणा और उनके बच्चोंको अपार कष्टोंका सामना करना पड़ता था। खानेके लिये कन्द मूलके सिवाय कुछ नहीं था। वृक्षोंके पत्ते शाकका काम देते थे। बाजरेकी मोटी रोटी भी कभी मयस्सर नहीं होती थी। कितने दिन बिना खाये ही रह जाना पड़ता। भोजन बनानेका समय न मिलता। शत्रुके आनेका हर समय भय लगा रहता था। कई बार भोजन पका पकाया छोड़ना पड़ा। ऊपरसे शत्रु आ गये। सुखकी नींद लिये बरसों ही बीत गये थे। घास-फूस ही मुलायम गद्दोंका काम देते। शिलाएं सेज बन जातीं। बाहोंका तकिया लगाकर महाराणा सो जाते। महाराणी भी इस कष्टको धैर्य पूर्वक सहन कर रही थीं। खाना उन्हें स्वयं ही बनाना पड़ता था। पानी भरना

और गृहस्थीके सभी काम उन्हें अपने हाथों करने पड़ते थे, एक जगहसे दूसरी जगह जाते समय पैरोंमें कांटे चुभ जाते थे, पैरोंमें छाले पड़ जाते थे, जंगलोंमें राणाके सहायक भील थे। भील राणाको देवता मानकर पूजते थे। राणाकी प्राणरक्षामें भील अपनी जान दे देते थे। जब कभी राणाकी मुगल सैनिकोंसे अचानक ही मुठभेड़ हो जाती, तो भील ही राणाके बच्चोंकी देखभाल किया करते थे। एक बार कई सौ मुगल राणापर टूट पड़े। राणा उस समय बच्चोंके साथ जंगलमें बैठे थे। उनके पास उस समय दस-पांच भीलोंके अतिरिक्त और कोई था भी नहीं। अपनी रक्षाकी तो राणाको कोई चिन्ता न थी, परन्तु बच्चोंकी प्राण-रक्षाकी चिन्ताने राणाको व्याकुल कर दिया था। उस समय इनके स्वामि-भक्त भील ही काम आये। भील बच्चोंको सुरक्षित जंगलमें ले गए और वहाँ उन्हें घनी छायाके वृक्षोंमें टोकरियोंमें बाँधकर लटका दिया, चारो तरफ कटीली झाड़ियाँ भी लगा दीं ताकि हिंसक जन्तु हानि न पहुँचा सकें। कुछ भीलोंको रक्षाके लिये छोड़कर बाकी राणाके पास आ गये। राणा

अकेले ही शत्रुओंका सामना कर रहे थे। बहुतसे मुगल वहीं काम आये और शेष अपनी जान बचाकर भाग गये। मुगलोंको भगाकर राणाने भीलोंसे अपने बच्चोंकी कुशलताका प्रश्न किया। भीलोंने जवाब दिया—"राणाजी, महाराणी और कुमार बिलकुल सुरक्षित हैं। आप उनकी चिन्ता न करें।" कई शताब्दियोंके बीत जानेपर भी आज उन वृक्षोंमें लोहेके कड़े और बहुत-सी कीलें गड़ी हुई दिखाई देती हैं।

शाहबाजके मेवाड़से चले जानेके बाद राणाने फिर विजय-यात्रा शुरू कर दी। राणा प्रतापका प्रधान मन्त्री भामाशाह मालवेमें रामपुराके राव राजाके यहाँ था। शाहबाजके विदा हो जानेका संवाद सुनकर भामाशाहने फिर बिखरे हुए राजपूत सैनिकोंको बटोरना शुरू कर दिया। मालवासे उन्हें पच्चीस लाख रुपये तथा बीस हजार मोहरें मिल गई थीं। इस धनको लेकर भामाशाह राणाकी सेवामें उपस्थित हुए। भामाशाहसे मिलकर उनका उत्साह फिर जाग उठा। भामाशाह पुनः प्रधान मन्त्रीके पदपर नियुक्त हुए। एक बार फिर मेवाड़में

राणाके आनेकी खबर बिजलीकी तरह फैल गई। राजपूतोंमें नया खून आ गया। कुछ सैन्य संग्रहके बाद राणाने सर्व प्रथम दीवरके किलेपर अधिकार किया। वहाँ शाहबाज द्वारा नियुक्त सुल्तान खाँ सेनापति था। कुमार अमरसिंहने इस युद्धमें अद्भुत वीरता दिखलाई। इनकी मुठभेड़ मुगल सेनापति सुलतान खाँसे हो गई। कुमार अभी बालक थे,परंतु शेरका बच्चा शेर होता है। कुमारके हाथ सुल्तान मारा गया। दीवरका किला राजपूतोंके हाथमें आ गया। इस विजयसे मेवाड़में प्रतापका फिर सिक्का जम गया। दीवरका किला बड़ा मजबूत और नामी था। प्रतापकी इस विजयसे मुगलोंमें आतंक आ गया। उसे राणा प्रतापके हाथोंमें इतनी सरलतासे आया देखकर अन्य छोटे छोटे कितने ही किलोंके दुर्गाधीश स्वयं ही किले छोड़कर भागने लगे। यहाँसे राणा कुम्भलगढ़के निकट हमीरसरके दुर्गमें गये। मुगल सेनाने बिना लड़ेही दुर्गको खाली कर दिया। मुगलोंके हाथोंमें जो किले हजारोंके रक्तपातके बाद आये थे, वही राणाके हाथोंमें बिना रक्तकी एक बूँद भी गिरे आ गये। शत्रु

राणाके नामसे काँपते थे। युद्धकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। धीरे धीरे ओब्रान, जावर और छप्पनके दुर्ग भी राणाके कब्जेमें आ गये। राणाने चावन्डाको अपना विश्रान्ति गृह माना। कुमार अमरसिंहने साठके लग-भग पराजित दुर्गोंमेंसे इकतीसको फिर लौटा लिया था। डोंगरपुर तथा बाँसवाड़ाके राजाओंको जो मुगलोंकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे, युद्धमें हराकर उन्हें अपनी तरफ मिलाया।

राणाकी विजयके इन समाचारोंने अकबरके दर-बारमें खलबली मचा दी। अकबरने पुनः १५७८ के दिसम्बरमें शाहबाजखाँको भेजा। शाहबाजके साथ इस बार हल्दीघाटीमें नाम पाये हुए गाजीखाँ, मुहम्मद हुसैन, शेख तैमूर बदख्शाई तथा मीरजादा अलीखाँ भी थे। अभी राणा अपने सहायकोंको अच्छी तरहसे संगठित भी न कर सके थे। बिखरी हुई राजपूत सेन भी संगठित न हुई थी। शाहबाजने अपने काममें बड़ी आसानीके साथ फतह हासिल किया। जिन दुर्गोंपर राजपूतोंने इस बार अधिकार किया था उनपरसे उन्हें बहुत जल्दी बेदखल

होना पड़ा। राजपूतोंको परास्त कर शाहबाज १५७९ के जून मासमें अकबरके यहां चला गया। थोड़े ही दिनोंके बाद राजपूतोंने फिर सिर उठाया। अकबरने शाहबाज-को पुनः मेवाड़की रक्षाके लिये भेजा। राणा प्रताप और शाहबाजमें कभी कभी मुठभेड़ भी होती रही। शाहबाज फिर राणा प्रतापकी खोजमें लग गया। उसने अपनी सारी शक्ति राणाका पीछा करनेमें लगा दी। इस बार राणा प्रतापको असीम कष्टोंका सामना करना पड़ा। घनघोर जंगलों और भीषण चोटियोंपर वह राणाके पीछे लगा रहा। एक क्षण भी राणाको चैन नहीं मिलता। जहां ही आराम करते या भोजन-की तैयारी करते तबतक मुगलोंके सिपाही आ पहुंचते। कहीं कहीं तो केवल भगवानने ही उनकी रक्षा की। आखिरमें तंग आकर राणाने आबूसे बारह मील दूर सोधाकी पहाड़ियोंमें आश्रय लिया। शाहबाजखां इन पहाड़ियोंमें राणाका पीछा न कर सका। शाहबाज विफल प्रयत्न हो कुछ महीने बाद सन् १५८० के जून महीनेमें राजधानीको लौट गया।

अकबरके पास संधि-पत्र भेजना

राणा प्रतापका जीवन लड़ने हीमें बीता। इनके साथ साथ इनकी सुकुमारी पत्नी और नन्हें नन्हें कोमल बच्चे भी विपत्तियोंके ग्रास बने रहे। अपने आदर्शके लिये अपने सारे परिवारको कष्टमें डालना नहीं चाहते थे, परन्तु स्थिति ऐसी थी कि उनके लिये वह कुछ प्रबन्ध न कर पाते थे। अपनी सन्तानकी भविष्यकी चिन्ता उन्हें व्यग्र कर देती थी। उनकी आत्मा थर्राने लगती थी। जो महारानी उदयपुरके महलोंकी शोभा होती, वह भीलोंकी तंग झोपड़ियोंमें आश्रय ले रही थी। मखमली गद्दोंसे नीचे जिन्होंने कभी एक पैर भी न रखा, वे दुर्गम पहाड़ोंकी रुखड़ी और कटीली पगडण्डि-योंके ऊपर चलती थीं। जिनके शरीर बहुमूल्य वस्त्रोंसे सज्जित रहते, वे पुराने चिथड़ोंसे अपनी गुजर कर रही थीं। जिसकी भूख और प्यास मिटानेके लिये हजारों दास-दासियां तैयार रहती थीं वही अपने हाथों चूल्हा जलाकर अपने और अपने बच्चोंकी भूख मिटा रही

थीं। कभी-कभी अचानक मुगलोंके आ जानेसे पकी पकाई रसोई छोड़कर भागना पड़ता था। कई बार भूखे रहकर ही दिन गुजारने पड़ते थे।

बच्चोंकी दीन दशा देखकर राणा सिहर उठते। एक बार ऐसी घटना घटी कि राणाका दिल हिल गया। महारानी एक समय भोजन पका रही थीं। भीलोंने बड़ी कठिनाईसे कुछ अन्न बटोर कर ला दिया था। चूल्हा जल रहा था। महारानी एक-एक रोटी सेक कर रखती जा रही थीं। कई दिनोंकी भूखसे व्याकुल बच्चे उन रोटियोंकी ओर तरसाई आंखोंसे देख रहे थे। एक कहता था कि मैं लूंगा, दूसरा कहता था मैं। राणा प्रताप पास ही घासपर लेटे इस दृश्यको देख रहे थे। सूर्य्यवंशकी राजकुमारियोंको एक रोटीके टुकड़ेके लिये लड़ते देख कर राणा प्रताप व्याकुल हो उठे। जिनके पूर्वज किसी समय भारतवर्षके राजा और सम्राट् थे, उनके बच्चोंकी यह दशा ? राणाकी आंखोंमें आंसू भर आये। वह अपनी दीन हीन अवस्थापर भर पेट रोये। महाराणीके धैर्यका बांध भी भावोंके प्रवाहमें न ठहर

सका। उनकी आंखोंसे भी आंसुओंकी अविरल धारा बहने लगी। भील गण भी रो उठे। राणा और रानीके इस रुदनमें प्रकृतिने भी साथ दिया।

एक दिन और ऐसी ही घटना गुजरी। कई दिनोंके बाद रोटियां बनी थीं। रोटियोंके बननेके बाद बँटवारा हुआ। सब बच्चोंके हिस्से एक-एक रोटी आई। सब अपनी-अपनी रोटी अपनी झोलियोंमें डालकर खाने लगे। उस एक रोटीमेंसे आधा टुकड़ा शामके लिये वे रख छोड़ते थे। सबमें एक छोटी लड़की थी। उसने भी आधी रोटी खाकर आधी शामके लिये रख ली। उसे झोलीमें डालकर छोटी बच्ची शामके लिये निश्चिन्त हो गई। थोड़ी दूरपर एक जंगली नेवलेने लड़कीकी इस सम्पत्तिको देख लिया। छोटी लड़कीसे रोटी छिन लेना क्या कठिन था। एक ही झपेटेमें वह रोटी ले गया। नन्हींसी बच्ची जोरोंसे रोने लगी। महाराणीने पूछा तो कन्याने सिसकियां लेते हुए नेवलेकी ओर इशारा किया।

राणाजी भी पास ही एक चट्टानपर बैठे हुए थे। इस

घटनाको देखकर वह अपनी गिरी हुई अवस्थापर विचारने लगे। उनके विचारोंमें एकाएक परिवर्तन आ गया। सोचने लगे जो ताज उनकी सन्तानको पेटभर रोटी और क्षणभर आराम नहीं लेने देता, उसके रहनेसे न रहना ही अच्छा है। ऐसे दुख और कष्टप्रद वस्तुकी रक्षाके लिये अपने और अपने प्यारे बच्चोंको मौतसे भी अधिक भयंकर कष्ट देनेकी व्यर्थता उन्हें कुछ-कुछ समझमें आने लगी। इस दुखके समाप्त होनेका कोई लक्षण सुदूर भविष्यमें भी दिखलाई पड़ता तो इसके सहनेका कोई अर्थ हो सकता है। राणा प्रताप अकेला रह गये थे। भाई बन्धु सब अकबरकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे। अपनी कन्याएँ देकर उन्होंने अपनी दासतापर मुहर लगा ली थी। अकेले राणा कुलकी मर्यादाको बचानेके लिये मौतसे लड़ रहे थे। झूठे अभिमानकी रक्षाके लिये निर्दोष मेवाड़वासियोंको भट्टीमें झुलसाना राजनीति-पूर्ण नहीं था। राणा प्रताप अपनी भूलको समझ गये। उनका हृदय स्वयं इसे भूल समझने लगा। इधर अकबरने भी अपने राजपूतोंके द्वारा

अनेक बार राणाके कानों तक यह बात पहुंचाई थी कि राणा प्रताप यदि एक बार अपनी पराजय मान लें तो उनका बाल भी बांका न किया जायगा। राणा प्रताप अकबरकी इस बातको तुच्छदृष्टिसे देखते थे। पराजय मान लेना वह मृत्युसे भी अधिक भयंकर समझते थे। परन्तु अब उन्हें उसमें तत्व दिखलाई पड़ने लगा।

अपने विचारसे राणाने अकबरको सूचित कर दिया। एक दूतके हाथ सन्धि-पत्र भेजा। सम्राट् अकबर उस समय दरबारमें बैठे थे। इतनेमें राणा प्रतापका दूत पत्र लेकर पहुंचा। वह पत्र राणाके हाथका लिखा हुआ था। अकबरने उस पत्रको पढ़ा। उसे विश्वास न हुआ। उसे दुहराया। हस्ताक्षर प्रतापके ही थे। बादशाहने सोचा—क्या ऐसा भी हो सकता है? राणा प्रताप अपनी पराजय माननेके लिये तैयार हैं। अकबरको विश्वास न था कि कभी राणा प्रताप अकबरकी अधीनता स्वीकार करेंगे। उसको इसकी आशा कभी की छूट चुकी थी। इतने बड़े शुभ समाचारको वह अपने छोटेसे दिलमें नहीं रख सकता था। दरबारमें

घोषणा कर दी गई। दरबारियोंने विस्मयके साथ इस समाचारको सुना। बहुतोंको विश्वास न हुआ। इस पत्रकी सचाईका प्रमाण वही दे सकता था, जो राणा प्रतापकी लिपि पहिचानता हो। बहुत खोजनेपर सबका ध्यान कवि पृथ्वीराजकी ओर गया। पृथ्वीराजकी शादी महाराणाके खानदानमें ही हुई थी। यह बात अकबरको जच गई। तुरन्त पृथ्वीराजको दरबारमें हाजिर करनेका हुक्म हुआ।

पृथ्वीराज आ गये। अकबरने खुशीसे प्रतापका सन्धि-पत्र पृथ्वीराजके हाथमें दे दिया और कहा—'पृथ्वीराज, आज मैं सारे हिन्दुस्तानका सम्राट् हो गया। यह उसकी सनद है।

पत्र देखते ही पृथ्वीराजके चेहरेका रंग उड़ गया। आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों हिन्दू जातिका एकमात्र टिमटिमाता हुआ तारा भी अन्धकारमें विलीन हो गया। उन्हें मेवाड़का राजमुकुट अकबरके पैरोंकी धूलि चाटता हुआ नज़र आने लगा। पृथ्वीराज यद्यपि अकबरके हाथ बिक चुके

थे, मगर राणा प्रतापके वह हृदयसे भक्त थे। राणा प्रतापहीमें हिन्दू जातिकी प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा थी। प्रतापके ऊपर सबकी आशा लगी हुई थी। लोगोंको विश्वास था कि सत्यकी विजय होती है। इसलिये राणा प्रताप अपने आदर्शकी रक्षामें अवश्य सफल होंगे। पर संधि-पत्र देखतेही सबकी आशाएँ धूलमें मिल गईं। पृथ्वीराजने सोचा राणाके इस संकल्पको तोड़ना चाहिये। अवश्य ही राणाने दुःखके आवेशमें ऐसा पत्र लिखा है।

दस्तखत देखकर थोड़ी देर ठहरनेके बाद पृथ्वीराजने कहा—बादशाह सलामत, मुझे इस पत्र पर सन्देह है। यह हस्ताक्षर राणा प्रतापके नहीं हैं। अतः इस पत्रको सही मानकर कोई खुशीका काम नहीं करना चाहिये। पहले इसकी सचाईकी जांच होनी चाहिये।

अकबरने पृथ्वीराजको अनुमति दे दी। जो दूत राणा प्रतापके यहांसे पत्र लेकर आया था उसे कारागारमें डाल दिया। कविवर पृथ्वीराज घर आये। इससे पहिले वह इतने संकटमें कभी न पड़े थे। पृथ्वी-

राजने दुखकी सांस लेते हुए सभी बातें अपनी पत्नी-को सुना दी। पत्नीको विश्वास न हुआ, पर जब उसने पत्र देखा तो उसे भी अत्यन्त दुःख हुआ।

पृथ्वीराजने अपने कर्तव्यका निश्चय कर लिया था। राणा प्रतापको उनके गौरवका स्मरण करना ही उनको सन्धिसे विमुख करा देनेमें पर्य्याप्त था। पृथ्वीराजने इस अस्त्रका प्रयोग करना ठीक समझा। बहुत प्रयत्न के बाद उन्होंने राणा प्रतापको एक चिट्ठी लिखी और जिस दूतने राणा प्रतापका सन्धिपत्र दरबारमें दिया था उसे ही वह चिट्ठी दे दी। पृथ्वीराजकी वह चिट्ठी बहुत प्रसिद्ध है।

यह पत्र पृथ्वीराजने दूतके हाथ महाराणा प्रतापको भेज दिया। दूतको कारागारसे छुड़वानेमें पृथ्वीराजने चतुराईसे काम लिया। बहुत सा धन देकर पृथ्वीराजने उसे कारागारसे छुड़ाया था। उस दूतको एक बहुत तेज घोड़ा भी पृथ्वीराजने दिया। चलते समय उसे खूब धन भी दिया। पृथ्वीराजको विश्वास था कि उनका पत्र पाकर राणा प्रताप अवश्य अपने मत को बदल

देंगे।

पृथ्वीराजका पत्र लेकर दूत राणा प्रतापके पास पहुँचा। पत्रके भेजनेके समयसे अब तक राणा प्रतापका चित्त बड़ा उद्विग्न हो रहा था। उन्हें अपनी निर्बलतापर रह रह कर क्रोध आता था। ग्लानिके मारे मस्तक पृथ्वीपर झुक जाता था, उन्हें अनुभव हो रहा था कि सन्धिका पत्र लिखकर उन्होंने बड़ी भारी भूल की है। जिन वीरोंने उनके लिये हँसते हँसते प्राण दिये थे उनका स्मरण करके महाराणा काँप उठते थे। उनकी इस समय यही इच्छा थी कि किसी प्रकार वह पत्र अकबर तक न पहुँचे। रह रह कर उन्हें ध्यान आता था कि पत्र पाकर अकबर कितना गर्वित हुआ होगा। मानसिंहकी खुशीका तो ठिकाना ही न रहा होगा।

महाराणाको इस समय उस दूतसे बढ़कर प्रिय व्यक्ति और कोई नहीं लग सकता था। दूतने अकबरके पत्र की जगह पृथ्वीराजका पत्र राणा प्रतापके हाथोंमें दिया। राणाने पत्र कई बार शुरूसे आखीर तक पढ़ा। उनका मुर्झाया हुआ चेहरा खिल उठा। भुजाएँ फड़कने

लगीं। शरीरमें मानों नया खून दौड़ गया। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा कि किसीने उन्हें डूबतेसे बचा लिया हो। दूतके आनेका समाचार जानकर चन्दावत सरदार महारानी पद्मावती तथा अन्य भील सरदार भी वहाँ आ गये। सन्धिपत्र भेजे जानेपर कोई भी प्रसन्न नहीं था। पृथ्वीराजके पत्रको पढ़कर सबमें नवीन जीवन आ गया।

राणाजीको सबसे अधिक खुशी यह हुई कि पृथ्वीराजने महाराणा द्वारा भेजे हुए पत्रको जाली करार दिया है। इस प्रकार दरबारमें राणा प्रतापकी मानरक्षा भी हो गई थी। पृथ्वीराजके पत्रके उत्तरमें महाराणाने एक पत्र लिखा:—

जिसका भाव यह है कि मैं एक लिंगकी शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुर्क बादशाह के सामने मस्तक नहीं नवाऊँगा। सूर्य्य पश्चिम से उदय नहीं होगा। जबतक मेरी तलवार मुगलों के सिर पर मंडराती है तुम अपनी मूंछें ऊँची रखो, सांगाका वंशज प्रताप अकबरकी ख्याति सहन नहीं करेगा।

महाराणाने यह पत्र पृथ्वीराजको उनके पत्रके उत्तर में भेज दिया। सब सरदार इस उत्तरको सुन कर खुश हुए। निर्बलताका जो काला पर्दा सबके चेहरों पर छा गया था वह दूर हो गया। राजपूतोंकी मर्यादा को बचानेके लिये फिर सब कटिबद्ध हो गये।

पृथ्वीराज राणा प्रतापके इस उत्तरको पाकर बड़े खुश हुए। जो वह चाहते थे वही होकर रहा। राणाने आवेशमें पत्र लिखा था और पुनः पछताने भी लगे थे। मेवाड़की ज्योति चमकती ही रह गई और यह ज्योति जो प्रतापने जगाई वह अमर ज्योति हो गई और चिरकाल तक संसारके इतिहासमें अपने प्रकाशके द्वारा अन्धकार को मिटाता रहेगा।

पृथ्वीराजने सम्राट्के पास सन्देश भेज दिया कि राणा प्रतापका वह पत्र जाली था। वह शिर झुकानेको तैयार नहीं हैं।

पृथ्वीराजने जो पत्र राणाको लिखा था उसका सारांश यह है—"अकबरके हाथ बेहया हिन्दू औरतें और निर्लज्ज मनुष्य बिक चुके हैं। ऐसे पापियों और

कुलांगारोंके बीच राणा प्रताप! आप ही एक दिव्यज्योति हैं, फिर आप वहाँ कैसे रहते! नौरोजके मेलेमें हिन्दू अपनेको वेचते हैं। क्या आप भी इस बाजारमें अपनी प्रतिष्ठाको वेचनेके लिये तैयार हैं। आप हमीरके वंशज हैं। अकबरके मनोरथ पूरा करनेमें आप सहायकहो जाते। अन्य राजपूत अपनी मान मर्यादा अकबरके हाथ बेंच चुके हैं। केवल आप ही विजयकी पताका लेकर भारत माँ के मुखको उज्वल किये हुए हैं। एक दिन अकबर भी इस संसारसे चला जायगा। उसके बाजारका कहीं भी अस्तित्त्व न रहेगा। परन्तु राणा प्रतापका नाम अमिट और अमर रहेगा।

अकबरकी आशा आशा ही रह गई। बादशाहने समझा कि उसके सबसे बड़े शत्रु प्रतापने अन्तमें उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। राणाका पत्र पाकर वह फूला न समाया था। परन्तु पृथ्वीराजके सन्देशने उसकी आशापर पानी फेर दिया। अब अकबर हिम्मत हार गया था। उसने समझ लिया था कि राणाको पकड़ना मृगतृष्णा है।

मेवाड़ विजय

यदि राणाप्रतापका भाई सागर स्वयं जाकर अकबरको फिर न उभाड़ता तो अकबर मेवाड़पर अन्तिम चढ़ाई कभी न करता। राणाके भाई जगमलको मेवाड़की गद्दी न मिली, तो वह अकबरकी शरणमें चला गया। अकबरने उसे सरोहीका राज्य दे दिया। सरोहीपर राव सरतान उस समय राज्य कर रहा था। जगमल अकबरकी सहायतासे राव सरतानको हराकर सरोहीपर राज्य करने लगा। राव सरतानने अकबरकी शरणमें जानेकी अपेक्षा जंगलोंमें जाना अच्छा समझा। जंगलोंमें रहकर वह सरोहीपर आक्रमण करता। जगमलने इस कंटकको दूर करनेके लिये राव सरतानसे युद्ध करनेकी ठानी। जगमलकी सहायतामें रामसिंह राठौरकी मुगल सेना भी थी। सम्राट् अकबर स्वयं इस युद्धमें दिलचस्पी ले रहे थे। सरतानके वीर चौहानोंके सामने मुगल सेना टिक न सकी। रामसिंह और जगमल दोनों ही युद्धमें काम आये। जगमलकी मृत्युपर प्रतापको दुख न हुआ। राणाप्रतापने राव सरतानको राणा अमरसिंहकी कन्या

देनेका संकल्प किया। जगमल व प्रतापके छोटे भाई सागरको यह बात पसन्द न आई। सागरने राणासे बहुत आग्रह किया, परन्तु राणाजीने राव सुरतानकी बहादुरीपर पुरस्कारके रूपमें यह सम्बन्ध जोड़ना चाहा था। सागर नाराज होकर दिल्लीके लिये रवाना हो गया। सागरने अकबरको मेवाड़पर चढ़ाई करनेके लिये उत्साहित किया। आखिर दिसम्बर १५८४ को राजा सागरमलके पुत्र राजा जगन्नाथकी अध्यक्षतामें एक सेना मेवाड़को रवाना हुई। जगन्नाथ बहुत शीघ्र मेवाड़ पहुँच गया। राणाप्रतापने उसके लिये भी जगह खाली कर दी। जगन्नाथने मंडलगढ़ और कुम्भलगढ़को आसानीसे ले लिया। राणाप्रतापने लड़नेका तरीका बदल दिया। वे चित्तौड़की तरफ चल दिये। मुगल सेना वहाँ भी उनके पीछे गई। राणा प्रताप कब्जेमें नहीं आये। एक बार राणा प्रताप मुगल सेनाके कब्जेमें आते आते बाल बाल बच गये। राणा प्रताप उस दिन निश्चिन्त भावसे बैठे थे। मुगल सेनाकी पहुँचकी उन्हें खबर भी नहीं थी। इसी समय सेनाने घेर लिया। एक राजपूत सैनिक

ने बड़ी वीरतासे इसकी सूचना राणाको दी। राणा प्रताप सूचना पाते ही बच निकले। जब राणा प्रताप बच निकले तो मुगल सेना निराश हो गई। उसने पीछा करना छोड़ दिया। उन्हें यह भी पता लगा कि राणा प्रताप गुजरातके लिये विदा हो गये हैं। १५८७ के जुलाई मासमें राजा जगन्नाथ अजमेरसे विदा हो गया।

राजा जगन्नाथकी मुगल सेनाने राणा प्रतापका जीवन कष्टमय बना दिया था। मुगल सेना राणाको जंगलमें भी विश्राम न लेने देती थी। एक बार राणा और उनके परिवारको सात दिन तक भूखे रहना पड़ा। राणाने अपने कुछ चुने हुए सरदारोंके साथ मेवाड़ को छोड़कर मुगल सेनाकी पहुँचके परे किसी स्थानके लिये प्रस्थान किया। चलते चलते यह दल ऋषभदेवके निकट पहुँचा। उधरसे राणाके प्रधानमंत्री भामाशाह भी ऋषभदेवके दर्शनके लिये आये हुए थे। दोनोंका वहाँ मेल हो गया। राणाकी दशा देखकर भामाशाहका हृदय पिघल गया। आँखोंसे आँसू टपक पड़े। राणा